ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

के साथ मिल गए जिससे यह वर्णन स्पष्ट हो गए उनकी मंथन का कार्य आसान नहीं।

17 नवंबर 1835 को इंग्लैंड में कर्नल जेम्स टॉड की मृत्यु हुई परंतु वे राजस्थान का इतिहास लिखने के कारण अमर हो गए टॉर्च भारतवर्ष में राजस्थान का इतिहास लिखने के लिए बहुत कुछ किया जिससे पता चलता है कि यूरोप के लोगों को भारत के संबंध में और विशेषकर राजपूतों के संबंध में जो गलतफहमी थी उसको दूर करने में कामयाब करें कार्ड में इतिहास का पहला महान ग्रंथ लिखा जिससे इतिहास बहुत बड़ी योग्यता के साथ बल्कि मनुष्यता के साथ लिखा उनकी योग्यता ऐतिहासिक ग्रंथ के प्रत्येक पृष्ठ में है डॉट का जीवन चरित्र बहुत ही उत्कृष्ट था वह गरीबों से प्रेम करते थे पीड़ितों के साथ बैठकर अपनी सहानुभूति प्रकट करते थे राजपूतों की कमजोरियों पर अफसोस करते और उन को समझा–बुझाकर अच्छी जिंदगी बिताने के लिए आदेश करते राजपूत अफीम का सेवन करते थे जिससे उनकी शक्तियां नष्ट हो रही इसलिए अफीम का सेवन के लिए वे राजपूतों से प्रतिज्ञा करवाते टॉड को मनुष्यता और कर्तव्य परायणता के लिए याद किया जाना चाहिए।

मैं राजस्थान के महलों से नहीं राजस्थान की मिट्टी से प्रेम करता हूं वृक्षों और उसकी शाखाओं से स्नेह करता हूं एवं इस देश के स्त्री पुरुषों के साथ अपना आत्मिक संबंध रखता हूं ताकि इन पंक्तियों में उनको इस देश के रहने वालों की सदा के लिए इसने की मजबूत जंजीर में बांध दिया संसार में इतिहासकार अनेक मिलेंगे लेकिन किसी विद्वान इतिहासकार में यह मनुष्यता नहीं मिलेगी।

जातियों के इतिहास ही वैसे ही अव्यवस्थित थे जैसे कि प्राचीन राजपूत जाति का इतिहास रू भारत में ऐतिहासिक सामग्री का अभाव होने पर भी यहां बहुत से ऐसे ग्रंथ पाए जाते हैं जिनके मंथन और संशोधन करने से इतिहास को इतिहास की सामग्री बहुत कुछ एकत्रित की जा सकती है इन ग्रंथों में पुराण हैं जिनमें राजवंशों के वर्णन है लेकिन कथाओं रूप को और बहुत सी असंभव बातों के साथ मिल गई जिससे यह वर्णन स्पष्ट हो गए उनके मंथन का कार्य आसान नहीं है भारत की ऐतिहासिक सामग्री के लिए उसके युद्ध संबंधी कार्य भी सहायता करते हैं लेकिन कविता और इतिहास दो चीजें साहित्य में दोनों की शैली अलग–अलग राजा और कल के बीच स्वार्थ का एक समझौता रहता है उसके फलस्वरूप कभी प्रशंसा के पुरस्कार में धन प्राप्त करता है और उसके ऐसा करने से ऐतिहासिक तथ्यों की इमानदारी में अंतर आ जाता है कवि का पक्षपात और विद्रोह दोनों ही इतिहास के लिए घातक है वह अपनी दोनों अवस्थाओं में सत्य से दूर निकल जाता है युद्ध संबंधी कार्यों में इस प्रकार के स्वाभाविक रूप से आते काव्य ग्रंथों में राजपूतों के इतिहास को इन दोषों से मुक्त नहीं समझा जा सकता इसलिए ऐसे ग्रंथों में मंथन और संशोधन की आवश्यकता अधिक है इस प्रकार के दोषों के होते होने पर भी भारतीय भादो की पुस्तकों से इतिहास की बहुत सी सामग्री प्राप्त की जा सकती है मंदिरों के दास दाल भेद और निर्माण सुधार के संबंध में भी मिलते हैं उन्हें भी इतिहास की बहुत सी चीजें मिलती है इस प्रकार की खोज करने से धार्मिक स्थानों कथाओं में बहुत सी चीजें पाई जाती हैं जो इतिहास लिखने में सहायता करती है जैनियों की धार्मिक पुस्तकों में कुछ ऐतिहासिक चीजें पाई जाती है इस देश की धर्म में अधिक गंभीर मंथन से काम की सामग्री प्राप्त कर सकता है इन ग्रंथों की में ब्राह्मणों ने अपनी इस प्रकार समाज पर कायम कर रखी है इसमें देशवासियों के अज्ञान के सिवा और कुछ नहीं है प्राचीन काल में मिस्र की भी यही अवस्था थी इन दोनों देशों की राजाओं और धार्मिक नेताओं के बीच एक ऐसा समझौता काम करता था जिससे प्रकट रूप में देश के सर्वसाधारण को अज्ञान के अंधकार में रखकर सदा अधीनता में रखा जा सके भारतवर्ष में युद्ध संबंधी जो काव्य ग्रंथ है वह इस देश के इतिहास की सामग्री देने में सहायता करते हैं कभी मनुष्य जाति के प्राचीन इतिहास का माने जाते हैं साहित्य में इतिहास का एक अलग स्थान बनने के समय तक कभी सही घटनाओं के लिखने का काम करते रहे भारतवर्ष में व्यास के समय से लेकर मेवाड़ के इतिहास लेखक बेनी दास के समय तक सरस्वती देवी की पूजा होती रही पश्चिमी भारत में अन्य लेखकों के साथ साथ कभी इतिहास के प्रधान लेखक रहे लेकिन उनकी कविता की भाषा एक अजीब होती है और जब तक उनकी कविताओं का अर्थ किया जाए अथवा कोई उनका अर्थ करने वाला हो वह कविताएं समझ में नहीं आती उन कवियों में एक बात और भी है अतिशयोक्ति अधिक रहती है और उनकी इस अतिशयोक्ति से इतिहास का सही हो जाता है इस दशा में प्राचीन काल में जिन कवियों के ऐतिहासिक घटनाओं का उल्लेख किया उनके ग्रंथों में ऐतिहासिक सामग्री भारत में ऐतिहासिक सामग्री का अभाव होने पर जीया बहू से से ग्रंथ पाए जाते हैं जिनकी मंथन और संशोधन करने से इतिहास उस इतिहास की सामग्री बहुत कुछ कतिस किया सकती है इन ग्रंथों में पुराण है जिनमें राजवंश ओके वर्णन है लेकिन सखा रूप को और बहुत सी असंभव आंखों

हिंदुओं का साहित्य और उनकी संस्कृति संसार के दूसरे देशों से भिन्न है हिंदुओं के दर्शन शास्त्र उनकी कविता उनके अन्य ग्रंथ उनकी स्वतंत्रता का परिचय देते हैं बड़ी मौलिकता और स्वतंत्रता के इतिहास में भी असंभव है क्योंकि उनकी इतिहास की रचना की संभावना अन्य प्रेरणा के आधार पर नहीं की जा सकती हिंदुओं के ग्रंथों में धर्म की घनिष्ठता अधिक इसके साथ ही यह स्वीकार करना चाहिए कि इंग्लैंड और फ्रांस के साहित्य की पुस्तकों के अध्ययन से ठीक नहीं की गई थी उस समय तक इन दोनों देशों के समस्त यूरोपीय जातियों की इतिहास भी वैसे ही अव्यवस्थित और नीरज से जैसे कि प्राचीन राजपूत जाति के इतिहास भारत में ऐतिहासिक सामग्री का अभाव होने पर भी यहां बहुत से ग्रंथ पाए जाते हैं जिनकी मंथन और से इतिहास की सामग्री बहुत कुछ एकत्रित की जा सकती है मदद कर सकती तू दिल किशन विल्सन और हमारे दूसरे विद्वानों ने भारत और से ऐतिहासिक साहित्य को संसार के सामने लाने का बहुत कुछ काम किया है फिर भी संसार का कोई भी विद्वान इस बात का दावा नहीं कर सकता कि विभाग के ऐतिहासिक विज्ञान के दरवाजे तक पहुंचने की सिवा और कुछ अधिक काम कर सका भारत के अनेक भागों में विशाल पुस्तकालय मुस्लिम आक्रमणकारियों के विद्युत से बच गए अब तक मौजूद हैं और उनके हजारों ग्रंथ आज भी देखने को मिलते हैं इतना सब होने पर भी इस देश में ऐतिहासिक ग्रंथों का यदि अभाव है उसका कारण है यह मानना पड़ेगा कि प्राचीन काल में हिंदू एक शब्द और शिक्षित जाती थी उसने साहित्य संगीत और अनेक दूसरी कलाओं में बड़ी योग्यता प्राप्त की थी फिर यह कैसे माना जा सकता है कि उनकी अपनी ऐतिहासिक घटनाओं राजाओं के व्यवहार और राज्य शासन के कार्यों के लिखने का ज्ञान ना रहा महमूद गजनवी के आक्रमण से लेकर 800 वर्षों तक भारत की अवस्था जिस प्रकार संकट में रही जिस प्रकार इस देश के प्रमुख नगर निर्दई आक्रमणकारियों के द्वारा लूटे गए और जिस प्रकार उनकी साहित्य की गोलियां चलाई गईं उन पर एक नजर डालने के बाद हमारे सामने यह दृश्य अपने आप आकर उपस्थित हो जाते हैं जब इस देश के राजा महाराजा अपनी राजधानियों से भगाए जाते थे और वे आरक्षित अवस्था में एक दुर्ग से दूसरे दुर्ग में जाकर सांस लेते थे वह निर्जन वनों में जाकर अपने परिवारों और प्राणों की रक्षा करते थे क्या यह समय ऐसा था जब इस देश के लोग इस समय की ऐतिहासिक घटनाओं के लिखने का काम कर सकते थे रूम और यूनान के ऐतिहासिक ग्रंथों की तरह हिंदुओं के ग्रंथों की आशा करना है एक बड़ी भूल है हिंदुओं के समस्त ग्रंथ जीवन का एक स्रोत प्रवाहित करते हैं जो बाकी संसार के साहित्य से बिल्कुल भिन्न है इस अवस्था में हिंदुओं का इतिहास भी कुछ इस प्रकार का होना चाहिए हिंदुओं का साहित्य और उनकी संस्कृति संसार के दूसरे देशों से मिलना है हिंदुओं के दर्शन शास्त्र उनकी कविता और उनके अन्य अन्य ग्रंथ उनकी स्वतंत्रता का परिचय देते हैं यही मौलिकता और स्वतंत्रता उनकी इतिहास में भी अधिक संभव है क्योंकि उनकी इतिहास की रचना की संभावना किसी अन्य प्रेरणा के आधार पर नहीं की जा सकती हिंदुओं के ग्रंथों में धर्म की घनिष्ठता अधिक है और साथ ही हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि इंग्लैंड और फ्रांस के साहित्य की गतिविधि जब तक यूरोप के प्राचीन इतिहास की पुस्तकों के अध्ययन से खींची गई थी उस समय तक दोनों देशों की इतिहास ही नहीं बल्कि समस्त यूरोप की सब

किया और उसके कुछ दिनों बाद यूरोप के देशों में भ्रमण करते चले गए 1827 के मई महीने में जर्नल आफ एशियाटिक सोसाइटी में उनका एक लेख प्रकाशित हुआ था इसमें उन्होंने अपने निबंध रॉयल सोसाइटी के सभा में पढ,।

कर्नल जेम्स टॉड कृत राजस्थान का इतिहास राजपूतों का प्रथम प्रामाणिक इतिहास माना जाता है तथा यह ग्रंथ आज से लगभग 200 वर्ष पूर्व प्रकाशित हुआ इस ग्रंथ की लिखने की आवश्यकता को कर्नल टॉड ने अपनी प्रस्तावना में रेखांकित किया÷

इस बात पर सभी लोग आमतौर पर विश्वास करते हैं कि भारतवर्ष का कोई इतिहास नहीं है लेकिन यह बात सही नहीं है क्योंकि अबुल फजल ने अपनी ऐतिहासिक पुस्तक में हिंदुओं के प्राचीन इतिहास का वर्णन किया है यदि हिंदुओं का कोई इतिहास नहीं था तो उसे व सामग्री कहां से मिली मिस्टर विल्सन ने राज तरंगिणी नामक कश्मीर के इतिहास का अनुवाद करके लोगों के धर्म को बहुत कुछ मिटाने का प्रयास किया है हिंदुओं के इस प्रकार केवल इस बात का प्रमाण देते हैं इतिहास लिखने की परिपाटी से प्राचीन काल में हिंदू अपरिचित नहीं थे खोजने के बाद इस बात का भी पता लगता है कि प्राचीन काल में हिंदुओं के पास आज के अपेक्षा ऐसी अधिक पुस्तकें थी जो प्राचीन काल में हिंदुओं के इतिहास को संग्रह करने में मदद कर सकती थी कूल ग्रुप विलकिंग्सन विल्सन और हमारे दूसरे विद्वानों में भारत वर्ष के ऐतिहासिक साहित्य को संसार के सामने लाने का बहुत कुछ काम किया है फिर भी संसार का कोई भी विद्वान इस बात का दावा नहीं कर सकता कि वह भारत के ऐतिहासिक विज्ञान के दरवाजे तक पहुंचने के सिवा और कुछ अधिक काम कर सका है भारत के अनेक भागों में विशाल पुस्तकालय जो मुसलमान आक्रमणकारियों के विनाश से बच गए हैं अब तक मौजूद हैं और उनके हजारों ग्रंथ आज भी देखने को मिलते हैं इतना सब होने पर भी इस देश में ऐतिहासिक ग्रंथों का यदि अभाव है तो उसका कारण है यह मानना पड़ेगा कि प्राचीन काल में हिंदू एक सभ्य और शिक्षक जाती थी उसने साहित्य संगीत शिल्प और अनेक दूसरी कलाओं में बड़ी योग्यता प्राप्त की थी फिर यह कैसे माना जा सकता है उसको अपनी ऐतिहासिक घटनाओं राजाओं के व्यवहारों और राज्य शासन के कार्य को लिखने का ज्ञान ना रहा महमूद गजनवी के आक्रमण से लेकर 200 वर्षों तक भारत की व्यवस्था और अवस्था जिस प्रकार संकट में रही जिस प्रकार इस देश के प्रमुख नगर निर्दई आक्रमणकारियों के द्वारा लूटे गए और जिस प्रकार उनके साहित्य की होली जलाई गई उन पर एक बार नजर डालने के बाद हमारे सामने से सब दृश्य अपने आप आकर उपस्थित हो जाते हैं जब इस देश के राजा महाराजा अपनी राजधानियों के से भगाए जाते थे और वे आरक्षित अवस्था में एक दुर्ग से दूसरे ग्रुप के में जाकर सांस लेते थे वे निर्जन वन में जाकर अपने परिवारों और प्राणों की रक्षा करते थे क्या वह समय ऐसा था जब देश के लोग उस समय की ऐतिहासिक घटनाओं के लिखने का काम कर सकते थे रोम और यूनान की ऐतिहासिक ग्रंथों की तरह हिंदुओं के ग्रंथों आशा करना बड़ी भूल है हिंदुओं के समस्त जीवन का शुरू प्रवाहित करते हैं जो बाकी संसार के साहित्य से बिल्कुल भी नहीं इस अवस्था में हिंदुओं का इतिहास जी कुछ इस प्रकार का होना चाहिए

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

राजस्थान का इतिहास लिखने के लिए अनिवार्य साबित हो उन्होंने गुफाओं और खंडहरों के भीतर जाकर बहुत कुछ खुद की चट्टानों पर खुद ही लेखों को प्राप्त किया टॉड को स्वदेश छोड़े हुए 22 वर्ष के थे अपने सौजन्य के कारण वे सब राजस्थान में प्रिय बन गए थे राजस्थान पहुंचकर उन्होंने सबसे पहले वहां की भूगोल और नसों का काम पूरा किया और उसके बाद राजस्थान की इतिहास की सामग्री जुटाने में लग गए उनको से प्रेम था इस देश के राजपूतों की वीरता को सुनकर बहुत प्रभावित हुए थे राजस्थान के बहुत से भागों में पहुंचकर उन्होंने प्रदेश के पुराने इतिहास की सामग्री एकत्रित की गई जहां कहीं पहुंचते बड़े बूढ़े और जानकारों के साथ बैठकर बातें किया करते और काम की बातें इकट्ठा करके लिख लेते प्राचीन शिलालेख और इस प्रकार की दूसरी सामग्री एकत्र करते और उन्होंने बड़े नगरों में अपने एजेंट नियुक्त किए जो और दूसरे प्राचीन सिक्के एकत्र कर उनके पास तक पहुंचाते थे जैन मंदिरों राजाओं और प्रतिष्ठित पंडितों की प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकों के संग्रह बड़ी रुचि से देखते थे और उनकी उपयोगी सामग्री लेने का काम करते महाराणा भीमसिंह की इतिहास संबंधी सामग्री एकत्र करने में कर्नाटक की बड़ी सहायता की उनके द्वारा पुराना महाभारत रामायण पृथ्वीराज रासो की सामग्री प्राप्त प्राप्त हुई उन्हीं के द्वारा पुराना महाभारत रामायण पृथ्वीराज रासो आदि अनेक पुस्तकों की सामग्री और को प्राप्त हुई राजस्थान के राजवंशों की ख्याति पृथ्वीराज रासो खुमान रासो हम्मीर रासो रतन रासो विजय विलास सूर्यप्रकाश जगत विलास जय विलास राज प्रकाश राज प्रशस्ति नवसा राम सॉन्ग चरित्र कुमारपाल चरित्र महान चरित्र अमीर का राजा बल राज तरंगिणी जयसिंह कल्पद्रुम राजवंशों की वंशावली अनेक प्रकार की बहुत सी सामग्री बड़े परिश्रम के साथ–साथ ने एकत्र की अनेक प्रकार के काव्य ग्रंथ नाटक व्याकरण ज्योतिष शिल्प महात्मा और जैन धर्म संबंधी पुस्तकें अरबी फारसी भाषा की कई हस्तियां शिक्षकों उन्होंने उत्तम संग्रह किया बहुत स्लो के शिलालेखों ताम्रपत्र की प्रतियां बहुत ही प्राचीन मूर्तियां और 20 हजार के करीब प्राचीन सिक्के उन्होंने अपने इतिहास की सहायता के लिए एकत्र किए 1822 में 1 जून को इंग्लैंड के लिए उदयपुर किया उसके पहले ही उन्होंने अपने का ढांचा तैयार किया था राजपूताना का भ्रमण किया और कोई भी नगर और स्थान उनसे नहीं बचा इन यात्राओं में आश्चर्यजनक सामग्री उनको प्राप्त हुई वरावल स्थान के एक छोटे से मंदिर में गुजरात के राजा अर्जुन देव के समय का एक बड़ा उपयोगी ताम्रपत्र उन्हें मिला सोमनाथ घूमते हुए जूनागढ़ पहुंचकर प्रसिद्ध प्राचीन गुफाओं के गिरनार के पास एक बड़ी चट्टान पर अशोक की धर्म आज्ञा ओं के पास अनेक प्राचीन राजाओं के प्राचीन लेख देखें परंतु इन मिले हुए लेखों को पढ़ने वाला उन्हें कोई नहीं मिला 17 जनवरी 1823 को वह मुंबई पहुंचे और उन्होंने अपनी संपूर्ण यात्रा का संग्रह इंडिया नामक अपनी पुस्तक में प्रकाशित किया मुंबई से रवाना हो गए जहां 1823 ईस्वी में मार्च के महीने में एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना हुई थी वहां जाकर कर्नल टॉड सदस्य बने और कुछ दिनों बाद पुस्तकालय अध्यक्ष बना दिए गए इस सभा में उन्होंने अपने संग्रह का निबंध पड़ा जिसे लोगों ने बहुत पसंद किया इसलिए कि उस समय तक यूरोप के विद्वान राजपूत जाति के इतिहास से अपरिचित से 18 नवंबर 1826 में कर्नल टॉड ने अपनी 40 वर्ष की अवस्था में लंदन नगर के डॉ वकील पुत्री से विवाह

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

कर्नल जेम्स टॉड कृत राजपूतों का प्रथम प्रामाणिक इतिहास

डॉ राजेश सिंह
प्रमुख सचिव विधान परिषद
उत्तर प्रदेश सचिवालय लखनऊ

पुनर्जागरण ने यूरोप में नवीन चेतना की जागृति में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया कॉपरनिकस और गैलीलियो जैसे वैज्ञानिकों ने विज्ञान को ठोस आधार प्रदान किया उस पर भावी पीढ़ी के वैज्ञानिकों ने अपने प्रयासों के माध्यम से भव्य भवनों का निर्माण किया तथा चिंतन की गति को नवीन दिशा दी मुद्रण कला के विकास में अनुसंधान के ज्ञान की परिधि को विश कर दिया वैज्ञानिकों का प्रमुख उद्देश्य समाज धर्म एवं प्रकृति में विद्यमान धारणाओं को दूर करना था विद्वानों ने अपनी आलोचना का मुख्य विषय दर्शन और इतिहास को बनाया दर्शन के क्षेत्र में दर्शकों ने आत्मा परमात्मा और विश्व से संबंधित विभिन्न वैज्ञानिक आधार सहित विवरण प्रस्तुत किए वैज्ञानिक विचारधारा से प्रेरित वैज्ञानिकों ने विज्ञान की कसौटी पर करने का वैज्ञानिक आंदोलन से प्रेरित वैज्ञानिक दार्शनिकों ने उन ग्रंथों को विज्ञान की कसौटी पर सिद्ध करने का यत्न किया वैज्ञानिक आंदोलन से प्रेरित एवं प्रोत्साहित अनेक दार्शनिकों ने इन भाव वादी अवधारणाओं को यथावत शिकार करने से पहले ऐसे अनेक वैज्ञानिक तथ्यों को उठाया दिन की यथार्थता वैज्ञानिक कसौटी पर सिद्ध की जा सके, ऐतिहासिक गवेषणा की दीक्षा के साथ शोधार्थी इतिहासकार में उच्च कोटि की चिंतन शक्ति भी अपरिहार्य है वाह आलोचना से तात्पर्य शोध के अंतर्गत ऐतिहासिक साक्ष्यों पांडुलिपियों अभिलेखों की विश्वसनीयता को प्रमाणित करना है वाह आलोचना की आवश्यकता को मूल रूप से कुछ कारणों के साथ अनुभव किया गया जैसे आजकल बहुत से इतिहासकार तथ्यों को दिग्भ्रमित करने के लिए ऐतिहासिक साक्ष्यों के मूल स्वरूप को परिवर्तित करते हैं इतिहासकार में उच्च कोटि की चिंतन शक्ति भी परिहार है वह आलोचना से शोध के अंतर्गत ऐतिहासिक वाक्यों पांडु लिपियां अभिलेख की विश्वसनीय प्रमाणित करना उसकी आवश्यकता को किया गया जैसे आजकल बहुत सी इतिहासकार सच्चो को भ्रमित करने के लिए ऐतिहासिक सांसों की मूर्ति करते हैं।

सन 1819 ईस्वी में अक्टूबर महीने में कर्नल टॉड जोधपुर पहुंचे और वहां से नाथद्वारा कुंभलगढ़ घाणेराव नाडोल होते हुए उन्होंने कई शिलालेखों की खोज की साथ ही ताम्रपत्र ओं हस्तलिखित पुस्तकों सिक्कों को प्राप्त किया इस प्रकार का कार्य पुष्कर और अजमेर में भी हुआ उन्हीं दिनों कर्नल टॉड बीमारी का शिकार हुए लेकिन वह इतिहास को इतिहास की सामग्री जुटाने का काम बराबर करते रहे एक दिन जब उन्हें खराब स्वास्थ्य का सामना अधिक मात्रा में करना पड़ा उस समय भी वह चारपाई पर लेटे हुए ब्राह्मणों और पटेलों से बात करते हुए प्राचीन ऐतिहासिक घटनाओं को सुनकर लिखने का काम करते रहे सरकारी काम करते हुए भी कर्नल टॉड इस खोज में लगातार जुटे रहे रोहित इतिहास के लिए जरूरी था राजस्थान पर उनके शिलालेखों सिक्कों और इस प्रकार की दूसरी चीजें जो उन्हें मिली वह